परमाणु हथियारों पर प्रतिबंध

सन् 2017 में, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु हथियार उन्मूलन अभियान (ICAN) और उसके सहयोगियों द्वारा एक दशक के पक्षसमर्थन के बाद, 122 देशों ने दुनिया के सबसे भयानक हथियारों पर प्रतिबंध लगाने वाली एक ऐतिहासिक संधि को अपनाने के लिए मतदान किया, जिसे परमाणु हथियार निषेध संधि (TPNW) के रूप में जाना जाता है। यह संधि सन् 2021 में लागू हुई।

उस समय तक, परमाणु हथियार ही सामूहिक विनाश के ऐसे एकमात्र हथियार थे जिन पर व्यापक, विश्व स्तर पर लागू प्रतिबंध के अधीन नहीं थे। इस प्रकार, इस नई संधि ने अंतर्राष्ट्रीय कानून में एक बड़ी कमी को पूरा किया।

यह परमाणु हथियारों से मानव अस्तित्व, पर्यावरण, सामाजिक-आर्थिक विकास, वैश्विक अर्थव्यवस्था, खाद्य सुरक्षा, और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए बढ़ते खतरे पर गहरी चिंता से उत्पन्न हुआ था।

यह न केवल परमाणु हथियारों को पूरी तरह से प्रतिबंधित करने वाली पहली बहुपक्षीय संधि है, बल्कि वह संधि भी है जो परमाणु हथियारों को सत्यापित रूप से समाप्त करने की रूपरेखा स्थापित करती है और उनके उपयोग एवं परीक्षण के पीड़ितों की सहायता करती है।

हालाँकि आज तक कोई भी परमाणु-हथियार संपन्न देश TPNW में शामिल नहीं हुआ है, यह परमाणु हथियारों के उपयोग के खिलाफ वैश्विक वर्जना को मजबूत करने और निरस्त्रीकरण के लिए लंबे समय से प्रतीक्षित कार्रवाई को प्रोत्साहित करने के लिए एक अपरिहार्य कदम है।

इतिहास ने दिखाया है कि कुछ हथियारों का निषेध उनके उन्मूलन की दिशा में प्रगति को सुगम बनाता है। जिन हथियारों को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया है, उन्हें तेजी से अवैध माना जाता है, जिससे उनकी राजनीतिक स्थिति कमज़ोर हो जाती है और इसके साथ ही, उनके उत्पादन के लिए संसाधन अनुपलब्ध हो जाते हैं।

जैसे-जैसे समय के साथ अधिक से अधिक देश TPNW में शामिल होंगे, इसके मानदंड मजबूत होंगे, और परमाणु-सशस्त्र देशों पर उनके अनुरूप होने का दबाव तेज हो जाएगा। अब तक, दुनिया के आधे से अधिक देश इस संधि में शामिल हो चुके हैं।

यह एक ऐसी दुनिया के लिए एक शक्तिशाली विकल्प प्रदान करता है जिसमें सामूहिक विनाश के खतरों को हावी होने दिया जाता है। यह खतरनाक संकट के समय में आगे बढ़ने का मार्ग प्रस्तुत करता है।

TPNW के मुख्य प्रावधान

निषेध

TPNW देशों को कभी भी परमाणु हथियारों को विकसित करने, परीक्षण करने, उत्पादन करने, प्राप्त करने, भंडारण करने, स्थानांतरित करने, उपयोग करने या उपयोग करने की धमकी देने से रोकता है। उन पर अपने क्षेत्र में किसी अन्य राष्ट्र के परमाणु हथियारों को अपने क्षेत्र में रखने, या संधि द्वारा निषिद्ध गतिविधियों में संलग्न होने के लिए दूसरों की सहायता या प्रोत्साहन करने से भी प्रतिबंधित किया गया है।

उन्मूलन की रूपरेखा

यह संधि परमाणु हथियार कार्यक्रमों और संबंधित सुविधाओं के सत्यापनीय और अपरिवर्तनीय उन्मूलन के लिए एक कानूनी ढांचा स्थापित करती है। इसमें शामिल होने वाले परमाणु-सशस्त्र राष्ट्र को तुरंत अपने परमाणु हथियारों को परिचालन स्थिति से हटाना होगा और उन्हें 10 साल की समय-सीमा के भीतर, एक समझौता-वार्ता से तय, समयबद्ध योजना के अनुसार नष्ट करना होगा। कोई देश संधि में शामिल होने से पहले भी अपने परमाणु हथियारों को नष्ट कर सकता है और एक नामित अंतरराष्ट्रीय प्राधिकरण द्वारा इसकी पुष्टि करवा सकता है।

पीड़ितों की सहायता और पर्यावरणीय उपचार

इस संधि के लिए देशों को चिकित्सा देखभाल, पुनर्वास और मनोवैज्ञानिक समर्थन सहित परमाणु हथियारों के उपयोग और परीक्षण के पीड़ितों की सहायता करने की आवश्यकता है। उन्हें परमाणु विस्फोटों से विकिरण से दूषित क्षेत्रों के उपचार की दिशा में भी उपाय करने चाहिए। इन प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण है।

अन्य संधियों के साथ संबंध

TPNW परमाणु हथियारों से संबंधित पिछली संधियों को सुदृढ़ करता है, जिसमें सन् 1968 की परमाणु अप्रसार संधि शामिल है, जिसका उद्देश्य परमाणु हथियारों वाले देशों की संख्या को सीमित करना और निरस्त्रीकरण के लक्ष्य को आगे बढ़ाना है।

जैसा कि सन् 1996 में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा बताया गया था कि देशों का कानूनी दायित्व है कि वे "परमाणु निरस्त्रीकरण की ओर ले जाने वाली समझौता-वार्ताओं को सद्भावनापूर्वक आगे बढ़ाएं और उन्हें एक निष्कर्ष तक पहुंचाएं"। इस दिशा में प्रगति की कमी ही TPNW पर समझौता-वार्ता के लिए एक प्रमुख प्रेरणा थी।

अन्य पूरक संधियों में सन् 1996 की व्यापक परमाणु-परीक्षण-प्रतिबंध संधि और लैटिन अमेरिका और कैरिबियन, दक्षिण प्रशांत, अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य एशिया में परमाणु-हथियार-मुक्त क्षेत्र स्थापित करने वाली क्षेत्रीय संधियाँ शामिल हैं।

TPNW अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून नामक कानूनी व्यवस्था पर आधारित है, जो युद्ध के तरीकों और साधनों को सीमित करता है। सशस्त्र संघर्ष के पक्षों को नागरिकों और सैनिकों के बीच अंतर करने में असमर्थ हथियारों, या अनावश्यक चोट या अनावश्यक पीड़ा देने वाले हथियारों का उपयोग करने से बचना चाहिए।

प्रतिबंधित हथियार

जैविक हथियार
– 1972 में प्रतिबंधित

क्लस्टर युद्ध सामग्री
– 2008 में प्रतिबंधित

रासायनिक हथियार
– 1993 में प्रतिबंधित

परमाणु हथियार
– 2017 में प्रतिबंधित

व्यक्ति विरोधी खदानें
– 1997 में प्रतिबंधित

सन् 2025 में न्यूयॉर्क में TPNW के सदस्यों की एक बैठक। साभार: ICAN

और देशों को सम्मिलित करना

कोई भी देश किसी भी समय TPNW में शामिल हो सकता है। जो देश वर्तमान में ऐसा करने से कतरा रहे हैं, वे अपनी स्थिति का पुनर्मूल्यांकन कर सकते हैं जब संधि की सदस्यता बढ़ती जाती है और उनके नागरिकों की मांगें तेज हो जाती हैं।

अतीत में अन्य संधियों के लिए भी ऐसा ही हुआ है। उदाहरण के लिए, जब अप्रसार संधि पर समझौता-वार्ता हो रही थी फ्रांस और चीन ने इसका विरोध किया था, लेकिन दशकों बाद इसमें शामिल होने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दुनिया तेजी से बदल रही है, और आज के नेता हमेशा सत्ता में नहीं रहेंगे। भविष्य की सरकारें संधि के गुणों को स्वीकार कर सकती हैं जिन्हें वर्तमान सरकारें नहीं करती हैं।

TPNW में शामिल हुए राष्ट्रों को दूसरों को भी इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है, जिसका अंतिम लक्ष्य "सार्वभौमिक अनुपालन" है।

संधि में शामिल होना एक स्पष्ट संदेश भेजता है कि परमाणु हथियार अस्वीकार्य हैं और इन्हें समाप्त किया जाना चाहिए। बढ़ते परमाणु खतरों के समय, यह सबसे भयानक हथियारों को खत्म करने की सर्वोत्तम आशा प्रदान करता है।

“आइए अब इस संधि द्वारा हमें प्रदान किए गए अनूठे अवसरों का लाभ उठाएँ और परमाणु हथियारों के युग को समाप्त करें।”

– रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति, 2020

निरस्त्रीकरण करने वाले: दक्षिण अफ़्रीका और कज़ाख़िस्तान

TPNW के दो प्रमुख समर्थकों, दक्षिण अफ़्रीका और कज़ाख़िस्तान ने पिछले कार्यों के माध्यम से दिखाया है कि परमाणु निरस्त्रीकरण संभव है।

सन् 1991 में सोवियत संघ के पतन के बाद जब कज़ाख़िस्तान ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की, तो उसके क्षेत्र में 1,400 से अधिक परमाणु हथियार मौजूद थे। उसने इन्हें सभी त्यागने का निर्णय लिया, यह मानते हुए कि उसकी सुरक्षा सर्वोत्तम रूप से निरस्त्रीकरण के माध्यम से ही सुनिश्चित होती है।

दक्षिण अफ़्रीका 1990 के दशक की शुरुआत में रंगभेद युग के अंत में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा। उसने स्वेच्छा से परमाणु बमों के अपने पूरे शस्त्रागार को नष्ट कर दिया – एक कार्य जिसे बाद में अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी द्वारा सत्यापित किया गया।

दोनों देशों के नेताओं ने परमाणु-शस्त्र-मुक्त दुनिया हासिल करने में अपने योगदान पर अत्यधिक गर्व व्यक्त किया है और दूसरों से भी ऐसा ही करने का आग्रह किया है।

दक्षिण अफ़्रीका के परमाणु बमों के आवरण।

“जनवरी 2021 में परमाणु हथियार निषेध संधि का लागू होना एक असाधारण उपलब्धि थी और परमाणु हथियारों के उन्मूलन की दिशा में एक कदम था।”

– एंतोनियो गुटेरेस, संयुक्त राष्ट्र महासचिव, 2021

सन् 2017 में TPNW के लिए एक उच्च-स्तरीय हस्ताक्षर समारोह। साभार: संयुक्त राष्ट्र फोटो